July 3, 2019

Dukhrana of St. Thomas Apostle
Jn 20: 24 - 29

ख्रीस्त में मेरे प्यारे विश्वासियों, आज माता कलीसिया प्रभु येसु के शिष्य संत थॉमस का पर्व मनाती है। विशेषकर भारत देश के लिए, सिरो मलाबार कलीसिया के लिए आज का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आज सभी सिरो मलाबार कलीसिया के विश्वासियों के लिए कलीसियाई दिवस या दुकराना का पर्व है। अतः सर्वप्रथम आप सभी को हमारे विश्वासी पिता संत थॉमस के शहादत दिवस, दुकराना पर्व की शुभकामनायें। आखिरकार दुकराना पर्व क्या है? इसके क्या मायने है? यह समझना और उसके अर्थ पर अमल करना आज हम सभी को जरुरी है। सिरो मलाबार कलीसिया का इतिहास 1967 वर्ष पुराना है। तब से विश्वास का वह बीज जिसे संत थॉमस ने बोया था आज बढ़कर उस वट वृक्ष की तरह हो गया है जिसकी जड़ें काफी गहरी और मज़बूत है। दुकराना पर्व हमें याद दिलाता है कि संत थॉमस के सुसमाचार प्रचार से जो विश्वास हमारे पूर्वजों को मिला था, जिस विश्वास को हमारे पूर्वजों नें निरंतर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया, उस विश्वास के दीपक को प्रज्वलित रखना उसे बरकरार या और भी मज़बूत करना हमारा फर्ज़ है। आज हमारे विश्वास के पराकाष्ठा को परिपक्व करने का दिन है।

इतिहास इस बात की गवाही देता है कि जब जब शहीदों व संतों का रक्त बहा है तब तब कलीसिया फली–फूली है। "मृत्यु कहाँ है तेरा दंश, कहाँ है तेरी विजय?" संत पौलुस का यह वचन और भी सार्थक सिद्ध होता है। क्योंकि मृत्यु के भय ने हमारे विश्वास को गिराया नहीं वरन् दुगुना बढ़ाया है। संत योहन आज के सुसमाचार द्वारा संत थॉमस के जीवन की एक झलक हमारे सामने पेश करते हैं। सुसमाचार बिरले ही उनके जीवन परिचर्या को हमारे सामने रखता है। लेकिन जहाँ भी उनकी झलक हमें दिखाई देती है वहाँ हमने संत थॉमस को एक साहसी, निडर और विश्वास

से परिपूर्ण व्यक्ति के रुप में देखा है। मित्र लाज़रुस की बीमारी की खबर सुनने के बाद जब येसु ने अपने शिष्यों से पुनः यहूदिया जाने की इच्छा ज़ाहिर की। तब हम भयभीत शिष्यों के रवैये को देखते हैं वे अपने प्रभु से कहते हैं "गुरुवर ! कुछ ही दिन पहले तो यहूदी लोग आप को पत्थरों से मार डालना चाहते थे और आप फिर वहीं जा रहे हैं" मृत्यु के भय से कोई भी शिष्य अपने गुरुवर के साथ जाना नहीं चाहता था लेकिन तब थॉमस ने अपने सहशिष्यों से कहा, "हम भी चलें और इनके साथ मर जायें।" यह उनकी निडरता को दर्शाता है।

यदि हम आज के सुसमाचार पर गौर करें तो हम पायेंगे कि यह एक ऐसे दृश्य को हमें दिखाता है जिसमें थॉमस को छोड़कर सभी शिष्य एक कमरे में मौजूद है। और थॉमस की गैर मौजूदगी में प्रभु येसु अपने शिष्यों से भेंट करने आते हैं। एक ओर जहाँ भयभीत चेले कमरे में बंद हैं वहीं थॉमस निर्भीकता से बाहर विचरण कर रहा है। थॉमस के लौटने पर जब उसे ज्ञात होता है कि प्रभु उनसे मिलने आये थे यह उसे बर्दाश्त नहीं होता है। और वह अपने मन की व्यथा को व्यक्त करते है कि यह कैसे संभव है कि प्रभु उससे मिले बिना ही चले गये। "जब तक मैं उनके हाथों में कीलों का निशान न देख लूँ, कीलों की जगह पर अपनी उँगली न रख दूँ और उनकी बगल में अपना हाथ न डाल दूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करुँगा" यह कथन महज़ उनकी ज़िद नहीं वरन् प्रभु येसु के दर्शन की तीव्र अभिलाषा को प्रगट करता है। उनका हठ उनके विश्वास का बखान था।

आज के परिप्रेक्ष्य में अन्य ख्रीस्तीय विश्वासीगण संत थॉमस को एक संदेह करने वाले संत के रुप में देखते हैं। यदि उन्होंने संदेह किया तो उनका संदेह बिल्कुल जायज़ है क्योंकि उनके संदेह मात्र से प्रभु ईसा को स्पष्टीकरण या प्रमाण देने के लिए दुबारा प्रकट होना पड़ा जिसने न केवल थॉमस के विश्वास को परिपूर्ण किया बल्कि उन लोगों के विश्वास को भी जो इस संदेह में थे कि प्रभु ईसा वास्तव में पुनर्जीवित हुए हैं या नहीं। जिस प्रकार एक कक्षा में एक छात्र के संदेह से कई अन्य

छात्रों के संदेह को स्पष्टीकरण मिलता है ठीक उसी प्रकार उनका संदेह उनके विश्वास का पुष्टीकरण था।

जब हम आज के सुसमाचार के दूसरे पहलु पर नज़र डालते हैं तब हमें यह भी स्पष्ट होता है कि यह थॉमस का संदेह कदापि नहीं था क्योंकि अगर ऐसा होता तो प्रभु ईसा के कहने पर उनके बगल में उँगली डालकर अपने संदेह को साफ करते। लेकिन थॉमस ने ऐसा नहीं किया बस उनके मुख से यही शब्द निकले "मेरे प्रभु, मेरे ईश्वर"। यह घोषणा उनके प्रेम और उत्साह की अभिव्यक्ति थी। जब हम किसी से बहुत स्नेह करते हैं, किसी से घनिष्ठ संबंध रखते हैं, तब हमारे मुख से उस व्यक्ति के प्रति अपनापन भरा शब्द निकलता है और हम उस व्यक्ति के प्रत्येक उपलब्धि पर पुकार उठते हैं कि ये मेरा भाई, मेरा दोस्त, मेरा संबंधी आदि है। ठीक वही घनिष्ठता और अपनापन हम संत थॉमस में भी देखते हैं इसलिए उनके मुख से यही आह निकलती है "मेरे प्रभु, मेरे ईश्वर" । अर्थात संत थॉमस ने काफी घनिष्ठता से येसु को जाना था और जब घनिष्ठतम गुरु उनसे मिले बगैर ही चले गये तो उन्हे दुःख होता है।

जी हाँ मेरे प्रिय विश्वासियों, संत थॉमस की यह घोषणा आज हमारे विश्वास को परखने के लिए अनुप्रेरित करती है। हम अपने आप से सवाल करें क्या मेरा विश्वास इतना गहरा और येसु के प्रति प्रेम इतना घनिष्ठ है कि मैं भी उनके समान यह घोषित कर सकूँ कि हे येसु तू ही मेरा प्रभु है, तू ही मेरा ईश्वर है। यदि नही ंतो आज संत थॉमस हमें आह्वान कर रहे हैं कि हम भी उस येसु से अत्यन्त प्रेम करें तथा उस से घनिष्ठ संबंध बनायें। आमेन।

Rev. Fr. Saul Toppo

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019